भगत नामदेव - सबद १६
पतित पावन माधउ बिरदु तेरा ॥
रागु धनासरी, भगत नामदेव, गुरु ग्रंथ साहिब, ६९४

पतित पावन माधउ बिरदु तेरा ॥
धंनि ते वै मुनि जन जिन धिआइओ हरि प्रभु मेरा ॥१॥
मेरै माथै लागी ले धूरि गोबिंद चरनन की ॥
सुरि नर मुनि जन तिनहू ते दूरि ॥१॥ रहाउ ॥
दीन का दइआलु माधौ गरब परहारी ॥
चरन सरन नामा बलि तिहारी ॥२॥५॥

सार: आंतरिक करुणा में अहंकार को कोमल बनाने, घमंड को मिटाने और विनम्रता को खिलने के लिए जगह बनाने की शक्ति होती है। विनम्रता गहरी जागरूकता का द्वार बनती है और 'मैं' की बेचैन भावना को शांत करती है। यह कोमल आंतरिक दृष्टिकोण हमें हमारे सच्चे स्वरूप से जोड़ता है जो गर्व और पहचान से परे है। जैसे-जैसे घमंड कम होता है, हम अधिक खुले, ग्रहणशील और स्थिर होते जाते हैं। यह खुलापन अनुग्रह को किसी बाहरी वस्तु के रूप में नहीं बल्कि स्पष्टता और संतुलन की स्वाभाविक अवस्था के रूप में प्रवाहित होने देता है। गर्व से ऊपर उठने पर, हमारे मन को शांति मिलती है और करुणा अधिक सहजता से प्रवाहित होती है। आंतरिक करुणा हमारे आत्म-बोध को बदल देती है और हमें अधिक सामंजस्यपूर्ण तथा जागृत जीवन-पद्धति की ओर ले जाती है।

पतित पावन माधउ बिरदु तेरा ॥
निर्बल का मनोबल बढ़ाना तुम्हारी चेतना का स्वाभाविक गुण है। यह सार्वभौमिक चेतना के उस सुधारक नियम का प्रतीक है जो मन में स्पष्टता लाता है।

धंनि ते वै मुनि जन जिन धिआइओ हरि प्रभु मेरा ॥१॥
धन्य हैं वह प्रबुद्ध जीव, जो मेरे सर्वव्यापी स्रोत की उपस्थिति को पहचानते हैं। यह अंतरात्मा के चिंतन और स्वयं को चेतना के मूल स्रोत से जोड़ने के महत्व को रेखांकित करता है। (१)

मेरै माथै लागी ले धूरि गोबिंद चरनन की ॥
मेरी मानसिकता उस सर्वव्यापी स्रोत के विनम्र सार से स्पर्शित है। यहाँ धूल उस ज्ञान का प्रतीक है जो हमें ज़मीन से जोड़े रखता है जबकि माथा अहंकार को त्यागकर एकत्व के सत्य के प्रति पूर्ण समर्पण को दर्शाता है।

सुरि नर मुनि जन तिनहू ते दूरि ॥१॥ रहाउ ॥
देवता, मनुष्य और तपस्वी भी इस विनम्रता की अवस्था से दूर हो सकते हैं। यह दर्शाता है कि जो लोग प्रतिष्ठा और बौद्धिक अहंकार से बंधे रहते हैं, वह सच्ची अनुभूति के सार से वंचित रहते हैं। (१)(विराम)

दीन का दइआलु माधौ गरब परहारी ॥
सार्वभौमिक ज्ञान निर्बलों के प्रति करुणामय होता है क्योंकि उनके अहंकार को यह दूर कर देता है। यह आंतरिक करुणा को दर्शाता है जो गर्व को मिटाकर विनम्रता के माध्यम से अनुग्रह की कृपा को आकर्षित करती है और अहंकार से ऊपर उठाती है।

चरन सरन नामा बलि तिहारी ॥२॥५॥
नामदेव कहते हैं कि विनम्रता का सहारा ही तुम्हारी शक्ति है। यह संकेत करता है कि आध्यात्मिक शक्ति व्यक्तिगत पहचान को मिटाकर, पूर्णता में विलीन हो जाने में ही निहित है। (२)(५)

तत्त्व: भक्त नामदेव का कहना है कि परम आध्यात्मिक लक्ष्य स्वर्गीय ऊँचाइयों तक पहुँचना या ऋषित्व प्राप्त करना नहीं है, बल्कि यह तो धूल के समान विनम्र बनना है। सर्वव्यापी चेतना का सार स्वाभाविक रूप से हमारे मनोबल को ऊँचा उठाता है लेकिन यह तभी प्रकट होता है जब अहंकार का

त्याग कर दिया जाता है। जब हम एकत्व से दूर रहते हैं तब हम अपनी व्यक्तिगत पहचान में तो ऊँचे प्रतीत हो सकते हैं लेकिन एकता के मूल सार से वंचित रह जाते हैं। वास्तविक शक्ति विनम्रता के साथ उस घनिष्ठ जुड़ाव में निहित है जो अहंकार का नाश करती है और हमारी व्यक्तिगत पहचान को मिटाकर हमें व्यापक पूर्णता में विलीन कर देती है।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com